ग्रामीण जीवन के चितेरे कथाकार शिवपूजन सहाय

रश्मि कुमारी

आचार्य की योग्यताएँ और उपाधि से विभूषित शिवपूजन सहाय कुशल संपादक के रूप में प्रतिष्ठित हैं। शिवपूजन सहाय बिहार के गौरव एवं हिन्दी साहित्य के प्रतिष्ठालब्ध साहित्यकार रहे हैं। उनकी प्रतिभा तो बहुआयामी है ही तथा विपुल लेखन द्वारा उन्होंने साहित्य की समृद्धि की है। सहाय जी को प्रेमचन्द एवं छायावादी कवियों के भाषा संशोधक की भूमिका निभाने का सुअवसर प्राप्त है। उनकी औपन्यासिक कृति देहाती दुनिया को हिन्दी का प्रथम आंचलिक उपन्यास कहलाने का श्रेय प्राप्त है। कहानी विधा की समृद्धि में भी उनका अमूल्य योगदान रहा। 'मुंडमाल' उनकी चर्चित कहानी है, जिसमें नारी के त्याग का अद्‌भुत आदर्श प्रस्तुत किया गया है। इनके संपादकीय आलेख, निबंधों की संख्या विपुल है, जो हमें विस्मित और विमुग्ध करता है।

कहानी विधा की समृद्धि में योगदान करने वाली इस बड़ी हस्ती के कथा साहित्यगत विशिष्टताओं को उद्‌घाटित करना हमारा उद्‌देश्य है। आचार्य जी ने अपनी उत्कृष्ट कृति 'देहाती दुनिया' में होती भाषा का प्रयोग हू–बहू किया है।